



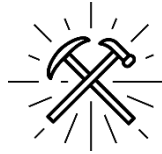
THE
MENTORING
PROJECT

आराधना के रूप में कार्य:
परिश्रम और उद्देश्य पर
बाइबल की शिक्षाएँ



THE CHRISTIAN
LINGUA TEAM

आराधना के रूप में कार्य:
परिश्रम और उद्देश्य पर
बाइबल की शिक्षाएँ



THE CHRISTIAN
LINGUA TEAM

विषय-वस्तु

विषय-वस्तु.....	3
परिचय	4
सत्र I: कार्य का एक धर्म-विज्ञान (यह क्यों महत्व रखता है)	8
सत्र II: कार्यालय की मूर्तियाँ (मन की जाँच)	17
सत्र III: एक मसीही के समान कार्य को कैसे करें (व्यावहारिक कौशल)	30
सत्र IV: विश्राम और कार्य का अंत	36
निष्कर्ष.....	41



परिचय

मैं चाहता हूँ कि आप अपनी अलार्म घड़ी के विषय में सोचें।

हम में से अधिकतर लोगों के लिए, वह एक अच्छी ध्वनि नहीं होती है। यह सुबह-सुबह बजती है। यह हमारी नींद में बाधा डालती है। यह संकेत करती है कि सप्ताहान्त समाप्त हो गया है और कार्य का सप्ताह आरम्भ हो गया है।

बहुत वर्षों तक, मुझे उस ध्वनि से भय लगता था। पास्टर बनने से पहले, मैं एक ऐसी नौकरी करता था, जो मेरे विश्वास से पूर्ण रूप से अलग लगती थी। मैं एक छोटे से कक्ष में बैठता था। मैं ई-मेल का उत्तर देता था। मैं आवंटित किए गए कार्यों पर कार्य करता था।

इतवार के दिन, मुझे जीवित अनुभव होता था। मैं भजन गाता था। मैं परमेश्वर के वचन का उपदेश सुनता था। मुझे परमेश्वर की उपस्थिति अनुभव होती थी। मैं जानता था कि हम जो कर रहे हैं, वह सदाकाल के लिए महत्त्व रखता है।

परन्तु फिर सोमवार आ गया।

मैं अपने कार्य-स्थल पर कुर्सी पर बैठकर सोचता था, “क्या परमेश्वर इसकी चिन्ता करता है?” ऐसा लगता था, जैसे मैं दो अलग-अलग जीवन जी रहा था। इतवार को मैं “आत्मिक मैं” होता था, और सोमवार को मैं “कार्यकर्ता मैं” होता था। उन दोनों के बीच की दूरी एक खाई के समान लगती थी।

मुझे पता है कि मैं इसमें अकेला नहीं हूँ।

एक पास्टर के रूप में, मैं हर सप्ताह अपनी कलीसिया के उन लोगों से बात करता हूँ, जो इस चिन्ता का अनुभव करते हैं।

मैं घर-पर-रहने वाली एक माँ से बात करता हूँ, जो लँगोट बदलती है और गिरा हुआ दूध पोछती है, और सोचती है कि क्या परमेश्वर उसकी थकान को देखता भी है।

मैं एक सामान बेचने वाले व्यक्ति से बात करता हूँ, जिसे इस बात का दुःख लगता है कि वह एक प्रचारक नहीं है, अपनी इस धारणा के कारण कि, बीमा बेचना किसी प्रकार से सुसमाचार को प्रचार करने से “कमतर” है।

मैं उस मैकेनिक से बात करता हूँ, जो यीशु से प्रेम तो करता है, परन्तु यह सोचता है कि रेंच को प्रयोग करने के उसके कौशल का मसीह के साथ उसके चलने से कोई लेना-देना नहीं है।

हमने एक झूठा विभाजन बना लिया है। हमने अपने जीवन के मध्य में एक रेखा खींच दी है। एक ओर, हम कलीसिया, प्रार्थना, और बाइबल अध्ययन को रखते हैं। हम उसे “पवित्र” कहते हैं। दूसरी ओर, हम अपनी नौकरी, अपने कार्य, और अपने व्यवसाय को रखते हैं। हम उसे “धर्मनिरपेक्ष” कहते हैं।

हमें लगता है कि परमेश्वर केवल पवित्र की ओर पर ही रहता है। जब हम इतवार की दोपहर को कलीसिया की इमारत से निकलते हैं, तो हमें लगता है कि वह वहीं रह जाता है।

परन्तु बाइबल यह नहीं सिखाती है। यह मार्गदर्शिका हमें यह समझने में सहायता करेगी कि *बाइबल कार्य के विषय में क्या कहती है* और क्यों हमारा प्रतिदिन का परिश्रम परमेश्वर की योजना का भाग है। जब आप पवित्रशास्त्र में से होकर कार्य को देखते हैं, तो आप केवल धार्मिक कार्यों को ही आराधना के रूप में नहीं समझते हैं, बल्कि “आराधना के रूप में कार्य” के विचार को भी समझने लगते हैं।

यदि हम पवित्रशास्त्र को सुधार-वाद के दृष्टिकोण से देखें, तो हम एक ऐसे परमेश्वर को देखते हैं, जो पूरे जीवन पर राज करता है, न की केवल धार्मिक भागों पर। एक डच धर्म-शास्त्री, अब्राहम कुइपर का, विख्यात कथन है कि, “हमारे मानवीय जीवन के पूरे दायरे में एक भी इंच ऐसा नहीं है, जिस पर मसीह, जो सब पर राज करता है, यह न कहे, ‘मेरा!’”

इसमें आपका छोटा सा कक्ष भी सम्मिलित है। इसमें आपका निर्माण करने का कार्य-स्थल भी सम्मिलित है। इसमें आपकी रसोई में बर्तन धोने का स्थान भी सम्मिलित है। जब हम अपनी दैनिक ज़िम्मेदारियों को बाइबल में कार्य के रूप में देखना आरम्भ करते हैं, तो हम पहचानते हैं कि हर कार्य एक आराधना के कार्य के रूप में कार्य कर सकता है।

जब हम इसे देखने से चूक जाते हैं, तो दो बातें घटित होती हैं।

सबसे पहले, हम निराश हो जाते हैं। हम सप्ताह में चालीस, पचास, या साठ घंटे कुछ ऐसा करने में बिता देते हैं, जो हमें लगता है कि अर्थहीन है। हमें लगता है कि हम अपने जीवन बर्बाद कर रहे हैं। हम केवल सप्ताहान्त के लिए, या सेवानिवृत्ति के लिए कार्य करते हैं। हम सप्ताह भर पाँव घसीट कर चलते हैं, और उस अगली बार की प्रतीक्षा करते हैं, जब हम कुछ “आत्मिक” कर सकेंगे।

दूसरा, हम गवाही देने से चूक जाते हैं। यदि हमें लगता है कि हमारा कार्य केवल बिल भरने के लिए एक आवश्यक बुराई है, तो हम श्रेष्ठता से कार्य नहीं करेंगे। हम कर्तव्यनिष्ठा से कार्य नहीं करेंगे। हम संसार के समान ही होंगे - कुड़कुड़ाते रहेंगे, कार्य में कभी काटते रहेंगे, और बस न्यूनतम कार्य करते रहेंगे। हम अपने परिश्रम के द्वारा परमेश्वर को महिमा देने के अवसर से चूक जायेंगे। एक विश्वासी जो आराधना के रूप में कार्य को समझता है, वह हर कार्य, हर सभा, और हर परियोजना को एक देखते हुए संसार के सामने परमेश्वर की महिमा करने की रीति के रूप में देखता है।

इस मार्गदर्शिका का लक्ष्य इस अंतर को बन्द करना है।

मैं चाहता हूँ कि आप अपने कार्य को वैसे ही देखें जैसा कि परमेश्वर उसे देखता है। मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ कि आप अपनी बाइबल को कार्य पर लाएँ - आवश्यक नहीं कि भोजन अवकाश में उपदेश देने के लिए, परन्तु यह तय करने के लिए कि आप ई-मेल का उत्तर कैसे देते हैं, आप अपने अधिकारी के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, और किसी परियोजना को कैसे पूरा करते हैं। जब आप यह समझ जाते हैं कि बाइबल कार्य के विषय में क्या कहती है, तो आप हर कार्य को परमेश्वर का दिया हुआ कार्य समझने लगते हैं।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कार्य करना परमेश्वर का विचार था, मनुष्य का नहीं। अदन की वाटिका में, बाइबल में कार्य पाप से पहले आरम्भ होता है, जहाँ आदम को खेती करने और संसार की देखभाल करने का उत्तरदायित्व दिया जाता है। परमेश्वर ने कार्य किया, और उसने कार्य करके अपनी छवि को दिखाने के लिए मनुष्य की रचना की। यह आराधना के रूप में कार्य को करना है, कोई दण्ड या अर्थहीन बोझ नहीं है।

हमें इस विषय में भी ईमानदार होना होगा कि कार्य करना इतना कठिन क्यों होता है। हमें यह मानना होगा कि कार्य इसलिए टूटा हुआ है, क्योंकि संसार टूटा हुआ है। हम काँटों और ऊँटकटारों से - या आज, कंप्यूटर खराब हो जाने और कठिन ग्राहकों से निपटते हैं।

परन्तु अधिकतर, हमें यह देखना होगा कि सुसमाचार हमारे कार्य को कैसे बचाता है।

यीशु मसीह के कारण, हम अपनी नौकरी के ओहदे से पहचाने नहीं जाते हैं। हम अपनी आय के सेवक नहीं हैं। हम परमेश्वर के ऐसी सन्तानें हैं, जिन्हें उसके संसार में करने के लिए एक कार्य दिया गया है।

जब हम यह समझ जाते हैं, तब सब कुछ बदल जाता है।

अलार्म घड़ी अभी भी बजती है। कार्य अभी भी कठिन ही है। परन्तु उसके पीछे का अर्थ बदल जाता है। हम केवल जीवित रहने भर के लिए कार्य करना बंद कर देते हैं। हम परमेश्वर की महिमा करने के लिए कार्य को करना आरम्भ कर देते हैं - सच्चा आराधना के रूप में कार्य।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

यह मार्गदर्शिका एक थके हुए कर्मों के लिए है। यह एक महत्वकांक्षी व्यवसायी व्यक्ति के लिए है। यह छात्र के लिए और सेवा-निवृत्त व्यक्ति के लिए है। यह हर उस जन के लिए है, जो जानना चाहता है कि इतवार से इतवार के बीच में मसीह की सेवा किस प्रकार से की जाए।

आइए देखें कि बाइबल आपके हाथों के कार्य के विषय में क्या कहती है।

1

कार्य का एक धर्म-विज्ञान (यह क्यों महत्व रखता है)

पहला कार्यकर्ता

अपने कार्य को समझने के लिए, हमें बाइबल के बिलकुल आरम्भ को देखना होगा।

आदम और हव्वा की कहानी पर पहुँचने के लिए बहुधा हम उत्पत्ति के, पहले कुछ पदों को अनदेखा कर देते हैं। परन्तु यदि हम धीरे चलें, तो हमें पहले ही वाक्य में कुछ विशेष बात दिखती है:

“आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की” (उत्पत्ति 1:1)।

बाइबल हमें परमेश्वर के विषय में सबसे पहली बात यह बताती है कि वह एक कार्यकर्ता है।

वह सो नहीं रहा है। वह खेल नहीं रहा है। वह कार्य कर रहा है। वह सृष्टि कर रहा है। वह बना रहा है। यह कार्य के विषय में बाइबल के सबसे आधारभूत दृष्टिकोणों में से एक है, जो हमें दिखाता है कि उत्पादकशीलता, कारीगरी, और रचनात्मक होना स्वयं परमेश्वर ही से आते हैं। यह बाइबल में परिश्रम करने के सबसे स्पष्ट उदाहरणों में से एक है, जो दिखाता है कि कार्य आरम्भ ही से संसार के ताने-बाने में बुना हुआ है।

सृष्टि की कहानी में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने अव्यवस्था को लेकर उसे व्यवस्थित कर दिया। वह प्रकाश को अंधकार से अलग करता है। वह पानी को एकत्रित करता है। वह एक वाटिका लगाता है। वह जानवरों को बनाता है।

ऐसा कह सकते हैं कि, परमेश्वर अपने हाथ गंदे करता है। वह एक वास्तुकार, एक माली, एक जीव-वैज्ञानिक, और एक कलाकार है।

और प्रत्येक दिन का कार्य समाप्त हो जाने पर, वह पीछे हटता है। उसने जो बनाया है, वह उसे देखता है। और वह कहता है, “यह अच्छा है।”

परमेश्वर अपने कार्य में सन्तुष्टि पाता है। वह अपने परिश्रम के फल का आनन्द लेता है। यह बाइबल के कार्य करने की रीति का एक खाका है, जो हमें यह दिखाता है कि अर्थ-युक्त परिश्रम केवल कार्य करने की क्षमता या लाभ के विषय में नहीं है - यह उस परमेश्वर को दिखाने के विषय में है, जो उद्देश्य और आनन्द के साथ परिश्रम करता है।

यह कार्य करने के मसीही दृष्टिकोण का एक आधार है। कार्य करना परमेश्वर के लिए निम्न नहीं है। इसलिए, कार्य करना हमारे लिए भी निम्न नहीं है। जब हम परिश्रम करते हैं, तब हम उसके स्वरूप को दिखाते हैं। चाहे हम आवंटित, यंत्रों, पुस्तकों के साथ कार्य करें, या बच्चों और बगीचों की देखभाल करें, हम उसके रचनात्मक स्वभाव को दिखाते हैं।

इसीलिए पवित्रशास्त्र हमें कार्य के विषय में बाइबल के पद देता है, जैसे कि कुलुस्सियों 3:23 (“जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो”), जो हमें स्मरण दिलाता है कि हर कार्य पवित्र हो सकता है, जब उसे परमेश्वर के लिए किया जाए। कार्य के लिए बाइबल के कुछ प्रेरणा देने वाले पद भी हैं, जैसे कि नीतिवचन 16:3 (“अपने कामों को यहोवा पर डाल दे, इस से तेरी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी”), जो हमें दैनिक कार्यों को विश्वासयोग्यता और भरोसे के स्थान की रीति पर देखने के लिए बढावा देते हैं।

जब हम अपनी नौकरी और जिम्मेदारियों को इस दृष्टिकोण से देखना आरम्भ कर देते हैं, तो हम बाइबल के अनुसार कार्य को केवल आय कमाने के तरीके से कहीं अधिक समझते हैं। हमारा परिश्रम आराधना बन जाता है। प्रत्येक कार्य - चाहे वह बड़ा हो या छोटा - आराधना के रूप में कार्य हो सकता है, विशेषकर तब जब हम इसे परिश्रम, धन्यवाद, और खराई के साथ परमेश्वर को अर्पित करते हैं (देखें 1 कुरिनियों 10:31)।

यह हमें अपने विश्वास को अपने कार्य से अलग करने से भी बचाता है। बाइबल और कार्य दो भिन्न-भिन्न विषय नहीं हैं। पवित्रशास्त्र यह निर्धारित करता है कि हम कार्यस्थल में कैसे आते हैं, हम समय का उपयोग किस प्रकार से करते हैं, हम गलतियों पर किस प्रकार से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, और कि हम सहकर्मियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं। इसे समझने से हम स्वस्थ लय को अपना सकते हैं, जिसमें बाइबल में दर्शाया कार्य-जीवन सन्तुलन भी सम्मिलित है, जिसका नमूना स्वयं परमेश्वर ने उत्पत्ति में दिया था, जहाँ उसने छः दिन कार्य किया और सातवें दिन विश्राम किया।

अन्ततः, हम जितना अधिक बाइबल में परिश्रम करने के विषय में पदों को पढ़ते हैं, जैसे कि नीतिवचन 13:4 या 2 थिस्सलुनीकियों 3:10, उतना ही हम देखते हैं कि सर्वश्रेष्ठ होना, ईमानदारी, और लगन केवल कॉर्पोरेट आदर्श ही नहीं हैं - वे आत्मिक अनुशासन हैं। हमारा दैनिक परिश्रम परमेश्वर की महिमा करने, दूसरों की सेवा करने, और उसके बनाए संसार में अपनी बुलाहट को पूरा करने का एक पवित्र अवसर बन जाता है।

सृष्टि का आदेश

संसार को बनाने के पश्चात्, परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया। और तुरन्त ही, वह उन्हें एक कार्य का ब्यौरा देता है।

“फूलो-फूलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो” (उत्पत्ति 1:28)।

धर्मशास्त्री इसे “सृष्टि का आदेश” या “संस्कृति का आदेश” कहते हैं।

यह परमेश्वर का मनुष्यों को आदेश है कि वे संसार का कच्चा माल लें और उससे कुछ बनाएँ।

उसने आदम को अदन की वाटिका में “उसमें काम करने और उसकी रक्षा करने” के लिए रखा (उत्पत्ति 2:15)।

कृपया ध्यान दें कि ऐसा कब होता है। यह उत्पत्ति 2 है। यह पाप के संसार में आने से पहले की बात है।

यह हमारे लिए समझने वाली एक आवश्यक बात है। कई मसीही मानते हैं कि कार्य करना पाप का एक दण्ड है। हम सोचते हैं, “यदि आदम ने वह फल नहीं खाया होता, तो मुझे आज कार्यालय में नहीं जाना पड़ता। मैं बस एक बादल पर बैठकर वीणा बजा रहा होता।”

यह झूठ है।

कार्य करना स्वर्गलोक का भाग था। परमेश्वर ने मनुष्यों को कार्य करने के लिए बनाया था। उसने हमें उत्पादक होने के लिए बनाया था।

परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में बनाया था। क्योंकि परमेश्वर एक कार्यकर्ता है, इसलिए हम भी कार्यकर्ता हैं। जब हम कुछ बनाते हैं, आयोजित करते हैं, साफ़ करते हैं, ठीक करते हैं, या बनाते हैं, तो हम परमेश्वर के चरित्र को दर्शाते हैं। यही पर *आराधना के रूप में कार्य* को देखने का विचार बहुत ही अधिक अर्थ वाला हो जाता है - हमारा परिश्रम केवल आर्थिक ही नहीं, परन्तु आत्मिक भी है। मसीही कार्य नीति को समझने के लिए उत्पादकता का बाइबल आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है।

एक ऐसे बच्चे की कल्पना कीजिए, जो अपने पिता को कार को ठीक करते हुए देख रहा है। बच्चा प्लास्टिक का एक रेंच उठाता है और अपने पिता की नकल करने लगता है। वह अपने पिता के समान बनना चाहता है।

जब हम कार्य करते हैं, तो हम यही करते हैं। हम अपने पिता की नकल कर रहे होते हैं।

चाहे आप कोड लिख रहे हों, दीवार पर रंग कर रहे हों, या किसी अनुबन्ध पर मोल-भाव कर रहे हों, तब आप अव्यवस्था में से व्यवस्था को ला रहे होते हैं। आप परमेश्वर के बनाए संसार के एक छोटे से भाग पर अपना

अधिकार जमा रहे होते हैं। जब इसे मसीही कार्य नीति की रूपरेखा के अन्तर्गत देखा जाए, तो सामान्य परिश्रम भी परमेश्वर के बनाए हुए कार्य की गरिमा को दिखाता है और एक आराधना का कार्य बन जाता है।

इससे हमारे कार्य को गहरी गरिमा मिलती है।

इसका अर्थ है कि आपका कार्य महत्व रखता है, केवल इसलिए ही नहीं कि इससे किराया निकलता है, परन्तु इसलिए, क्योंकि यह मनुष्य होने का एक भाग है। आप इसी के लिए बने थे, और आराधना के रूप में कार्य करने से हमें यह देखने में सहायता मिलती है कि अपने कार्य में सर्वश्रेष्ठ बनना, ईमानदारी, और सेवा को चुनने से परमेश्वर की महिमा होती है।

कार्य का टूटपन

यदि कार्य इतना अच्छा है, तो यह इतना बुरा क्यों लगता है?

हम थकावट से क्यों जूझते हैं? हमारे बुरे अधिकारी क्यों होते हैं? कार्य बहुधा उबाऊ, दोहराया जाने वाला, या निराशाजनक क्यों होता है?

इसके उत्तर के लिए, हमें उत्पत्ति 3 पर पृष्ठ को पलटना होगा।

आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत की। वे स्वयं के परमेश्वर बनना चाहते थे। पाप संसार में आया, और उसने सब कुछ तोड़ दिया।

इसने परमेश्वर के साथ के हमारे सम्बन्ध को तोड़ दिया। इसने एक-दूसरे के साथ के हमारे सम्बन्ध को तोड़ दिया। और इसने कार्य के साथ के हमारे सम्बन्ध को भी तोड़ दिया।

उत्पत्ति 3:17-19 में परमेश्वर जो श्राप देता है, उसे सुनिष्टः

“इसलिये भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा; और वह तेरे लिये काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी... अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा।”

ध्यान से देखें: परमेश्वर ने कार्य को श्राप नहीं दिया। उसने भूमि को श्राप दिया।

उसने हमारे कार्य के वातावरण को विरोधी बना दिया।

पतन से पहले, आदम वाटिका में कार्य किया करता था और उसमें आनन्द से फल लगते थे। यह एक साझेदारी थी।

पतन के पश्चात्, भूमि प्रतिरोध करने लगी। आदम गेहूँ बोता है, परन्तु उसके स्थान पर खरपतवार उग आती है। वह कठिन परिश्रम करता है, परन्तु फसल खराब हो जाती है। संघर्ष होता है। निराशा होती है।

यह “काँटों और ऊँटकटारों” का धर्म-विज्ञान है।

हर कार्य में काँट होते हैं।

किसान के लिए, यह सचमुच खरपतवार उगना और अकाल है।

सॉफ्टवेयर इंजीनियर के लिए, “काँटें” कोड में त्रुटियाँ और सिस्टम का क्रैश होना हैं।

एक शिक्षक के लिए, “काँटें” बिगड़े हुए विद्यार्थी और कभी न खत्म होने वाला कागज़ी-कार्य हैं।

एक माँ के लिए, “काँटें” वो कपड़े हैं, जो धोने के पाँच मिनट पश्चात् फिर से गंदे हो जाते हैं।

हम इस निराशा को अपनी हठियता में गहराई तक अनुभव करते हैं। हम कड़ा परिश्रम करते हैं, परन्तु वस्तुएँ सदैव कार्य नहीं करती हैं। परियोजनाएँ असफल हो जाती हैं। कम्पनियाँ दिवालिया हो जाती हैं। हमारे शरीर थक जाते हैं और दर्द करने लगते हैं।

यह “सोमवार सुबह की अनिच्छा” को समझाता है। हम एक पतित संसार में अच्छा कार्य करने का प्रयास कर रहे हैं, जो हमारा विरोध करता है।

हम भीतर से भी टूटे हुए हैं। पाप के कारण, हम कार्य को कुछ ऐसा बना देते हैं, जो उसे कभी होना ही नहीं चाहिए था।

हम कार्य को एक मूर्ति बना लेते हैं। हम अपने व्यवसाय से अर्थ और महत्व की आशा करते हैं। हम सोचते हैं, “यदि मुझे वह पदोन्नति मिल जाए, तो मैं कुछ बन जाऊँगा।” इससे अधिक कार्य का करना और चिन्ता होते हैं।

या, हम दूसरी सीमा पर चले जाते हैं। हम आलसी हो जाते हैं। हम कार्य से चिढ़ने लगते हैं। हम जितना कम हो सके उतना कम कार्य करने लगते हैं। हम आलसी नौकर के समान कार्य करते हैं।

तो, हमारे सामने एक समस्या है। हमें कार्य को करने के लिए बनाया गया है, परन्तु कार्य टूटा हुआ है। भूमि शापित है, और हमारे हृदय मूर्तिपूजक हैं।

इसीलिए *आराधना* के रूप में कार्य को मानने का विचार इतना आवश्यक हो जाता है। हमें कार्य के विषय में एक ऐसा छुड़ाया गया दृष्टिकोण चाहिए, जो हमारी आँखों को सांसारिक निराशा से ऊपर उठाकर परमेश्वर की महिमा की ओर ले जाए।

और इससे भी अधिक, हमें पवित्रशास्त्र से मिलने वाली आशा को देखना चाहिए। जब हम यीशु और कार्य के विषय में पढ़ते हैं, तो हमें पता चलता है कि यीशु ने अपने सांसारिक जीवन का अधिकतर समय एक बड़ई के रूप में बिताया, न कि एक उपदेशक के रूप में। उसका उदाहरण हमें सिखाता है कि सामान्य परिश्रम से भी परमेश्वर का आदर हो सकता है, कार्यस्थल पर हमारा सम्मान वापस आ सकता है और इस पतित संसार में आराधना के रूप में कार्य को फिर से खोजने में हमें सहायता मिल सकती है।

क्या कोई आशा है?

कार्य का छुटकारा

सुसमाचार यह शुभ समाचार है कि यीशु मसीह सभी बातों के छुटकारे के लिए आया है।

वह हमारी आत्मा को नरक से छुड़ाता है। वह हमारी देहों को मृत्यु से छुड़ाता है। और वह हमारे परिश्रम को छुड़ाने के कार्य को आरम्भ करता है।

एक पल के लिए यीशु के विषय में सोचिए। उसने पृथ्वी पर 33 वर्ष बिताए। उनमें से तीन वर्षों तक, वह एक उपदेशक और अश्चर्यकर्म करने वाला था।

परन्तु उससे पहले के वर्षों में, वह एक बड़ई था (मरकुस 6:3)।

परमेश्वर के पुत्र ने लकड़ी काटने, लकड़ी ढोने, और सम्भवतः फर्नीचर या इमारतें बनाने में दशकों बिताए। उसके हाथों पर पपड़ियाँ बन गई थीं। वह जानता था कि पसीना बहाना कैसा होता है। वह जानता था कि जब किसी ग्राहक को शुक्रवार तक मेज़ चाहिए होती है, तब क्या हाल होता है।

अपने हाथों से कार्य करके, यीशु ने मनुष्य के परिश्रम को पवित्र बना दिया। उसने हमें दिखाया कि सामान्य कार्य पवित्र होता है और इसे केवल आर्थिक रूप से सुरक्षित रहने के लिए ही नहीं, परन्तु आराधना के रूप में कार्य भी समझा जा सकता है।

परन्तु उसने केवल एक उदाहरण स्थापित करने से कहीं अधिक किया। वह हमारे पापों के लिए मरा और हमें नई सृष्टि बनाने के लिए फिर से जी उठा।

जब हम विश्वास के द्वारा मसीह के साथ जुड़ जाते हैं, तो हमारे कार्य को एक नया उद्देश्य मिल जाता है।

प्रेरित पौलुस हमें कुलुस्सियों 3:23-24 में मसीही कार्य के लिए नया आदेश देता है:

“जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो; क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।”

इससे सब कुछ बदल जाता है और यह भी बदल जाता है कि हम आराधना के रूप में कार्य को कैसे देखते हैं।

पौलुस बन्धुआ-मजदूरों को लिख रहा था - ऐसे लोग जिन्हें कोई स्वतन्त्रता नहीं थी और जो बहुधा बहुत बुरी परिस्थितियों में कार्य करते थे। उनके कार्य निम्न स्तर के होते थे। कोई भी उन्हें धन्यवाद नहीं देता था।

फिर भी पौलुस उनसे कहता है: तुम प्रभु मसीह की सेवा कर रहे हो।

इसका अर्थ है कि आपका अधिकारी आपका अन्तिम अधिकारी नहीं है। आपका प्रबन्धक आपका अन्तिम पर्यवेक्षक नहीं है।

यीशु मसीह आपका स्वामी है।

जब आप कोई रिपोर्ट सौंपते हैं, तब आप उसे यीशु के लिए सौंप रहे होते हैं। जब आप कोई पहिया बदलते हैं, तब आप उसे यीशु के लिए बदल रहे होते हैं। जब आप स्नानघर को साफ करते हैं, तब आप उसे यीशु के लिए साफ कर रहे होते हैं। आराधना के रूप में कार्य का यही निचोड़ है - परमेश्वर को समर्पित साधारण कार्य।

इससे हमारे कार्य का बोझ कम हो जाता है।

यदि हम मनुष्यों के लिए कार्य कर रहे हैं, तो जब वे हमारी बुराई करते हैं, तब हम दुःखी हो जाते हैं। जब वे हमारी प्रशंसा करते हैं तब हमें घमण्डी हो जाते हैं। हम उनके अनुमोदन के आधार पर लगातार भावनाओं के एक उतार-चढ़ाव पर सवार रहते हैं।

परन्तु यदि हम मसीह के लिए कार्य कर रहे हैं, तो हम स्थिर हैं। हम सर्वश्रेष्ठ कार्य करना चाहते हैं, क्योंकि वह हमारे सर्वश्रेष्ठ कार्य का दावेदार है। परन्तु हमें बहुमूल्य अनुभव करने के लिए संसार की प्रशंसा की आवश्यकता नहीं है। हमारे पास पहले से ही परमेश्वर का प्रेम है।

एक नई प्रेरणा

सुधारवादी धर्म-विज्ञान हमें सिखाता है कि विश्वास के द्वारा, अनुग्रह ही से, हमारा उद्धार हुआ है।

आप परिश्रम करने के द्वारा स्वर्ग में नहीं जा सकते हैं। कार्यालय में कितनी भी सफलता मिलना, परमेश्वर पर प्रभाव नहीं डाल सकता है या आपके पापों का दाम नहीं चुका सकता है।

परन्तु क्योंकि हम अनुग्रह के द्वारा बचाए गए हैं, इसलिए हम कृतज्ञ होकर कार्य करते हैं।

हम उद्धार पाने के लिए कार्य नहीं करते हैं; हम इसलिए कार्य करते हैं, क्योंकि हमारा उद्धार हो गया है।

हम अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए कार्य करते हैं। और जब हमारा परिश्रम स्वयं को बढ़ावा देने के बदले सेवा का कार्य बन जाता है, तो यह स्वतः ही आराधना के रूप में कार्य बन जाता है, जिससे परमेश्वर के प्रति धन्यवाद दिया जाता है।

प्रसिद्ध सुधारक, मार्टिन लूथर, बहुधा इस विषय पर बात किया करते थे। उनका कहना था कि परमेश्वर को हमारे भले कार्यों की आवश्यकता नहीं है, परन्तु हमारे पड़ोसी को है।

परमेश्वर को जूतों की आवश्यकता नहीं है। परन्तु आपके पड़ोसी को जूतों की आवश्यकता है। इसलिए, एक मोची अपने पड़ोसी के लिए अच्छे जूते बनाकर परमेश्वर की सेवा करता है।

परमेश्वर को भोजन की आवश्यकता नहीं है। परन्तु आपके पड़ोसी को भोजन की आवश्यकता है। इसलिए, एक किसान अच्छी फसल उगाकर परमेश्वर की सेवा करता है।

यह आपकी नौकरी की गरिमा है। यह अपने पड़ोसी से प्रेम करने का एक तरीका है।

जब आप अपना कार्य अच्छी रीति से करते हैं, तब आप उन लोगों से प्रेम करते हैं, जिन्हें आपके कार्य से लाभ होता है।

यदि आप एक बरिस्ता हैं, तो आप अपने पड़ोसी के लिए एक गर्म, बढ़िया कॉफी का प्याला बनाकर उन्हें दिन को आरम्भ करने में सहायता करते हैं।

यदि आप एक लेखाकार हैं, तो आप अपने पड़ोसी से, उनके वित्त को आयोजित करने में उनकी सहायता करके और उन्हें कानूनी झंझट से दूर रखकर प्रेम करते हैं।

यदि आप एक सफ़ाई कर्मचारी हैं, तो आप अपने पड़ोसी को रहने या कार्य करने के लिए एक साफ़, और स्वस्थ स्थान देकर उनसे प्रेम करते हैं।

यह “धर्मनिरपेक्ष” कार्य नहीं है। यह राज्य का कार्य है। यह परमेश्वर के संसार और परमेश्वर के लोगों की देखभाल करने का कार्य है। जब इसे एक उद्धार के दृष्टिकोण से देखा जाए, तब हर धर्मी कार्य आराधना के रूप में कार्य बन जाता है, जिसका महत्व अनन्तकाल के लिए होता है।

तनाव में जीना

हमें ईमानदार होना चाहिए। हम अभी भी एक पतित संसार में रहते हैं। भूमि अभी भी श्रापित है।

सही धर्म-विज्ञान के साथ भी, कार्य फिर भी कठिन ही रहेगा। आप फिर भी थकेगे। फिर भी ऐसे दिन भी आयेंगे, जब आप नौकरी छोड़ देना चाहेंगे।

परन्तु अब, हमारे पास एक बड़ा दृष्टिकोण है।

हम जानते हैं कि हमारा परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता है (1 कुरिन्थियों 15:58)। हम जानते हैं कि परमेश्वर उसे भी देखता है, जिसे हम गुप्त में करते हैं।

हमारे पास एक प्रतिज्ञा भी है। बाइबल एक नए शहर - नए यरूशलेम - के चित्र के साथ समाप्त होती है।

उस नए शहर में, श्राप समाप्त हो गया है। अब काँटे और ऊँटकटारे नहीं हैं। परन्तु अभी भी चहल-पहल है। उसके दास उसकी सेवा करेंगे (प्रकाशितवाक्य 22:3)।

हम एक ऐसे संसार की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ पर कार्य करने में बहुत आनन्द आएगा। हम बिना थके और बिना निराशा के सृष्टि करेंगे, बनाएँगे और सेवा करेंगे।

तब तक, हम आशा में कार्य करते हैं। हम परमेश्वर से सामर्थ्य माँगते हैं, और हम आराधना के रूप में कार्य की सोच के साथ अपनी दैनिक जिम्मेदारियों को करते हैं, हर कार्य को उसकी बड़ाई करने का एक तरीका मानते हैं।

हम अपने जीवन को “इतवार” और “सोमवार” में बाँटना बन्द कर देते हैं। हम अपने कारखाने और कार्यालय में अपने विश्वास को ले आते हैं।

हम परमेश्वर के साधन हैं, जो टूटे हुए संसार में थोड़ी व्यवस्था और सुंदरता को लाते हैं, और लोगों को यीशु में हमारे परम विश्राम की ओर संकेत करते हैं।

2

कार्यालय की मूर्तियाँ (मन की जाँच)

जॉन कैल्विन, जो सुधार-वाद के एक विशेष व्यक्ति थे, का विख्यात कथन है कि मनुष्य का मन एक “निरन्तर मूर्तियाँ बनाते रहने वाला कारखाना” है।

उनका अर्थ था कि हम लगातार अच्छी वस्तुओं – जैसे कि परिवार, पैसा, या कार्य – को सर्वोच्च वस्तुओं में बदलते रहते हैं। हम उनसे वह करवाने का प्रयास करते हैं, जिसे केवल परमेश्वर ही कर सकता है। हम उनसे आशा करते हैं कि वे हमें सुरक्षा, अर्थ, और आनन्द प्रदान करें।

हम बहुधा मूर्ति पूजा को सोने की मूर्ति के सामने झुकने जैसा समझते हैं। परन्तु आज के संसार में, हमारी मूर्तियाँ सामान्य रूप से बहुत अधिक सूक्ष्म होती हैं। और सबसे सामान्य स्थानों में से एक, जिसे हम पूजा का स्थान बनाते हैं, वह कार्यस्थल है।

कार्यालय, कार्य स्थल, या फिर दुकान का फर्श एक आत्मिक रूप से निष्पक्ष भूमि नहीं है। यह आराधना करने का एक स्थान है।

हर दिन जब आप कार्य पर जाते हैं, तो आप किसी न किसी वस्तु की आराधना कर रहे होते हैं। या तो आप अपना कार्य परमेश्वर को अर्पित करके उसकी आराधना कर रहे होते हैं, या आप किसी और वस्तु की आराधना कर रहे होते हैं - सफलता, पैसा, अनुमोदन, या विश्राम। अपने परिश्रम को आराधना के रूप में कार्य समझने से हमारा मन अपनी इच्छाओं के बजाय परमेश्वर के साथ जुड़ा रहता है।

जब हम कार्य की आराधना करते हैं, तब हम उसे बर्बाद कर देते हैं। नौकरी एक अच्छा सेवक तो हो सकती है, परन्तु वह बहुत बुरी स्वामी भी होती है। यदि आप स्वयं को बचाने के लिए अपने व्यवसाय पर भरोसा करेंगे, तो यह अन्ततः आपको कुचल देगा।

हमें अपने मनो की जाँच करने की आवश्यकता है। हमें अपने प्रेरणा स्त्रोत के अंदर झाँककर यह देखने की आवश्यकता है कि वास्तव में हमें क्या वस्तु चला रही है।

पहचान बनाम बुलाहट

जब आप किसी जश्न में किसी नए व्यक्ति से मिलते हैं, तो आप सबसे पहला सवाल क्या पूछते हैं?

सामान्यतः यह होता है: “आप क्या करते हैं?”

हमारी संस्कृति में, हमें हमारे कार्य से पहचाना जाता है। हम डॉक्टर, प्लंबर, शिक्षक, या लेखपाल हैं। हम सोचते हैं कि, “मैं वही हूँ, जो मैं करता हूँ।”

एक मसीही के लिए यह एक खतरनाक स्थान है। यह हमारी पहचान को हमारे कार्य से जोड़ देता है।

यदि आपकी पहचान आपके व्यवसाय पर बनी है, तो आप एक भावनात्मक उतार-चढ़ाव से होकर गुज़रेंगे। जब व्यापार अच्छा चलता है, जब आपको पदोन्नति मिलती है, जब परियोजना सफल हो जाती है, तब आपको बहुत गर्व अनुभव होता है। आपको लगता है कि आप महत्व रखते हैं। आपको “धर्मी” अनुभव होता है।

परन्तु जब आप कोई गलती कर बैठते हैं, जब सौदा टूट जाता है, या जब आपको नौकरी से निकाल दिया जाता है, तब आप टूट जाते हैं। आपको केवल ऐसा ही नहीं लगता है कि आप किसी कार्य में असफल हो गए हैं, आपको लगता है कि आप अयोग्य हैं। आपका आत्म-सम्मान ही समाप्त हो जाता है।

ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि हम अपने को सही ठहराने के लिए अपने कार्य को देख रहे होते हैं। हम संसार को, अपने माता-पिता को, या स्वयं को यह प्रमाणित करने का प्रयास कर रहे होते हैं कि हम मूल्यवान हैं।

यह कार्य-धार्मिकता का एक रूप है। यह सुसमाचार के विपरीत है।

सुसमाचार हमें बताता है कि हमारी पहचान हमारे कार्यों में नहीं है, परन्तु इसमें है की मसीह ने हमारे लिए क्या किया है।

कुलुस्सियों 3:3 में प्रेरित पौलुस लिखता है, “क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।”

यदि आप एक मसीही हैं, तो आपका वास्तविक जीवन आपकी LinkedIn प्रोफ़ाइल नहीं है। आपका वास्तविक जीवन मसीह के साथ छिपा हुआ है।

इससे हमें बहुत अधिक स्वतन्त्रता मिलती है।

यदि आपकी पहचान मसीह में सुरक्षित है, तो आप कार्य में नाकामी को सह सकते हैं। इससे दुःख हो सकता है, और इसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है, परन्तु आप वास्तव में जो हैं, उसे यह छू नहीं सकता है। आप परमेश्वर की चहेती सन्तान हैं, और कार्यालय में एक बुरा दिन इसे बदल नहीं सकता है।

यदि आपकी पहचान मसीह में सुरक्षित है, तो आप सफलता को भी संभाल सकते हैं। आप इसे अपने सिर पर नहीं चढ़ने देंगे। आप जानेंगे कि आपकी प्रतिभाएँ परमेश्वर की ओर से उपहार हैं, और आप उसे महिमा देंगे।

हमें कार्य को अपनी पहचान मानने के बजाय उसे अपनी बुलाहट मानने की ओर बढ़ना होगा।

एक पहचान वह होती है, जिसे आप प्राप्त करते हैं; एक बुलाहट वह होती है, जो आपको दी जाती है। जब आप कार्य को बुलाहट के रूप में देखते हैं, तब आप अपने लिए नाम बनाने का प्रयास नहीं कर रहे होते हैं। आप बस उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने का प्रयास कर रहे होते हैं, जिसने आपको बुलाया है, अपनी ज़िम्मेदारियों को कृतज्ञता के साथ निभा रहे होते हैं और उन्हें आराधना के रूप में कार्य के रूप में मान रहे होते हैं, न कि अपने मूल्य को प्रमाणित करने के एक तरीके के तौर पर।

दो खाईयाँ

जब हम विश्वासयोग्यता से कार्य को करने का प्रयास कर रहे होते हैं, तब मार्ग के दोनों ओर दो खाईयाँ होती हैं। हम बहुधा एक या दूसरी खाई में गिर जाते हैं।

पहली खाई: अधिक कार्य करना

यह मूर्तिपूजा वाली खाई है। यह वह मनुष्य है, जो कार्य को करना बन्द नहीं कर सकता है। वे भोजन करते समय भी ई-मेल चेक करते रहते हैं। वे सप्ताहान्त पर कार्य करते हैं। वे अपने परिवार, अपनी सेहत, और अपनी कलीसिया की उपेक्षा कर देते हैं, क्योंकि उन पर अपने कार्य का जुनून सवार रहता है।

बहुधा, यह समर्पण जैसा लगता है। संसार इसकी प्रशंसा करता है। परन्तु परमेश्वर मन को देखता है।

हम अधिक कार्य क्यों कर रहे हैं? बहुधा, यह लालच या भय के कारण से होता है।

हम अधिक पैसे या अधिक स्तबे के लालची हो सकते हैं। हम अपना छोटा सा राज्य बनाना चाहते हैं। हम बेबीलोन की मीनार के बनाने वालों के समान बनना चाहते हैं, जिन्होंने कहा था, “इस प्रकार से हम अपना नाम करें” (उत्पत्ति 11:4)।

या, हम भय से प्रेरित हो सकते हैं। हमें भय लगता है कि हमारे पास पर्याप्त नहीं है। हम परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते हैं कि वह सब कुछ दे देगा, इसलिए हमें लगता है कि हमें यह सब स्वयं ही करना होगा। हम ऐसे कार्य करते हैं, जैसे मानो परमेश्वर है ही नहीं।

भजन संहिता 127:2 में अधिक कार्य करने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है: “तुम जो सबेरे उठते और देर करके विश्राम करते, और दुःख भरी रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है, क्योंकि वह अपने प्रियों को यों ही नींद प्रदान करता है।”

कार्य एक उपहार है, परन्तु जब हम इसे सर्वोच्च बना लेते हैं, तब यह थकाने वाला बन जाता है। सभोपदेशक की पुस्तक परिश्रम, विश्राम, और संतुष्टि के विषय में एक गंभीर स्मृति स्मरण दिलाती है। कार्य के विषय में सभोपदेशक हमें सिखाता है कि परमेश्वर से अलग होकर लगातार प्रयास करना “व्यर्थ और हवा का पीछा करने जैसा है” (सभोपदेशक 2:22-23)। प्रभु के बिना, परिश्रम जीवन-देने-वाला होने के बदले थकाने वाला बन जाता है।

यदि आप विश्राम नहीं कर सकते हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि आपको परमेश्वर पर भरोसा नहीं है। आपको लगता है कि यदि आप कार्य करना बन्द कर देंगे तो संसार घूमना बन्द हो जाएगा। परन्तु परमेश्वर प्रभुता सम्पन्न है। जब आप सोते हैं, तब भी वह सब कुछ संभाल सकता है।

दूसरी खाई: आलस्य

यह आलस्य की खाई है। यह वह मनुष्य है, जो कम से कम कार्य करता है, बस इतना कि गुज़ारा हो जाए। वे काम में कन्नी काटते हैं। वे समय को बर्बाद करते हैं। वे हर कार्य के विषय में कुड़कुड़ाते हैं।

नीतिवचन की पुस्तक “आलसी” के विषय में चेतावनियों से भरी हुई है।

“आलसी कहता है, ‘मार्ग में सिंह है! चौक में सिंह है!’” (नीतिवचन 26:13)। आलसी व्यक्ति बहानों से भरा हुआ होता है।

आलस्य केवल व्यक्तित्व में कोई कमी ही नहीं है, यह एक आत्मिक मुद्दा है। यह प्रेम करने में नाकाम होना है।

स्मरण रखें, कार्य के द्वारा ही हम अपने पड़ोसी से प्रेम करते हैं। यदि आप आलसी हैं, तो आप अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं कर रहे हैं।

यदि एक मैकेनिक आलसी है और बोल्ट को ठीक से नहीं कसता है, तो वह चालक को खतरे में डालता है। यदि एक शिक्षक आलसी है और पाठ को तैयार नहीं करता है, तो छात्रों का नुकसान होता है।

आलस्य, एक प्रकार की चोरी भी है। यदि आपको आठ घंटे कार्य करने के पैसे मिल रहे हैं और आप केवल चार घंटे ही काम करते हैं, तो आप अपने स्वामी से चोरी कर रहे हैं।

हमें दोनों ही खाईयों से बचना चाहिए।

मसीही मार्ग: परिश्रम

मसीही रीति परिश्रम का बीच का मार्ग है। हम कड़ा परिश्रम इसलिए नहीं करते हैं, क्योंकि हम चिन्तित या लालची हैं, परन्तु इसलिए कि हम कृतज्ञ हैं। हम सर्वश्रेष्ठ बनने का प्रयास करते हैं, परन्तु हम जानते हैं कि कब रुकना है। हम व्यस्त हैं परन्तु हम दास नहीं हैं।

यहाँ पर भी, कार्य पर सभोपदेशक की पुस्तक हमारी सहायता करती है। सभोपदेशक 3:13 हमें स्मरण दिलाता है कि “और यह भी परमेश्वर का दान है कि मनुष्य खाए-पीए और अपने सब परिश्रम में सुखी रहे।” कार्य तब सार्थक हो जाता है, जब उसे एक भेंट के रूप में स्वीकार किया जाये, प्रभु के लिए किया जाए, और मुट्टी बन्द करने के बजाय खुले हाथों से थामा जाए।

प्रशंसा के लिए कार्य करना

एक तीसरी मूर्ति है, जो बहुधा कार्य करते समय हमारे मनो में छिपी रहती है: मनुष्य को प्रसन्न करने वाली मूर्ति।

आप किसके लिए कार्य कर रहे हैं?

लोगों की प्रशंसा के लिए कार्य करना बहुत स्वाभाविक बात होती है। हम चाहते हैं कि हमारे स्वामी हमें पसंद करें। हम चाहते हैं कि हमारे सहकर्मी हमारा आदर करें। हम चाहते हैं कि हमारे ग्राहक हमसे प्रभावित हों।

एक अच्छी प्रतिष्ठा होने में कुछ भी गलत बात नहीं है। “बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है” (नीतिवचन 22:1)।

परन्तु अनुमोदन की चाहत आसानी से एक फँदा बन सकती है।

पवित्रशास्त्र इसे “दिखावे की सेवा” कहता है। कुलुस्सियों 3:22 में पौलुस इसके विरुद्ध चेतावनी देता है: “हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान, दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन की सीधार्ई, और परमेश्वर के भय से।”

दिखावे की सेवा का अर्थ केवल तब परिश्रम करना है, जब अधिकारी देख रहा हो। जब पर्यवेक्षक आपके कमरे में आता है, तब आप अचानक व्यस्त दिखने लगते हैं। जब वे चले जाते हैं, तब आप ढीले पड़ जाते हैं।

यह दिखाता है कि आप परमेश्वर से अधिक मनुष्य से डरते हैं।

“मनुष्य का भय” एक खतरनाक फँदा है। यदि आप दूसरों के अनुमोदन के लिए जीते हैं, तो आप उनकी राय के दास बन जाएँगे। आप कठिन निर्णय लेने से डरेंगे। आप दूसरों के साथ घुलने-मिलने के लिए अपनी ईमानदारी से समझौता करेंगे। आप आलोचना से कुचले जाएँगे।

आप एक गिरगिट बन जाएँगे, जो कमरे में कौन है, उसके अनुसार अपना रंग बदल लेंगे।

परन्तु यदि आप प्रभु से डरते हैं, तो आप मनुष्य के भय से मुक्त हैं।

आप जानते हैं कि परमेश्वर सदैव देखता है। जो कार्य आप गुप्त में करते हैं, वह उन्हें देखता है। जब आपको कोई और नहीं देख रहा होता है, तब जो अतिरिक्त परिश्रम आप करते हैं, वह उसे भी देखता है।

और उससे भी आवश्यक बात यह है, कि आप जानते हैं कि मसीह में आपको पहले से ही उसका अनुमोदन मिल चुका है।

यदि आप एक मसीही हैं, तो परमेश्वर से प्रेम पाने के लिए आप कार्य नहीं करते हैं। आप इसलिए कार्य करते हैं, क्योंकि वह पहले ही से आपसे प्रेम करता है। आपके पास वह एकलौती प्रशंसा है, जो महत्व रखती है।

इससे आपको एक गहरा, स्थिर आत्मविश्वास मिलता है।

आप अपने अधिकारी की आराधना किए बिना भी उनका सम्मान कर सकते हैं। भले ही वे कृतघ्न हों, तौभी आप उनकी सेवा, भली-भाँति कर सकते हैं। आप गलत व्यवहार को भी शालीनता से झेल सकते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि आपका सर्वोच्च प्रतिफल आपके स्वर्गीय पिता की ओर से आता है।

मूल्यांकन

आप यह कैसे पहचान सकते हैं कि आपके कार्यालय में मूर्तियाँ हैं?

अपनी भावनाओं को देखें। मूर्तियाँ हमेशा बलिदान को माँगती हैं। वे सामान्यतः आपकी शांति और आनन्द को बलिदान कर देती हैं।

क्या आप कार्य को लेकर लगातार चिन्तित रहते हैं? जब कोई आपके कार्य की आलोचना करता है, तब क्या आप क्रोधित या रक्षात्मक हो जाते हैं? क्या आप उन लोगों को हीन दृष्टि से देखते हैं, जिनके कार्य आपसे “निम्न” हैं? क्या आप उन लोगों से जलते हैं, जिनके पास आपसे “बेहतर” कार्य हैं? क्या आपको विश्राम दिन में विश्राम लेना असम्भव लगता है?

ये धुँएँ के संकेत हैं। ये आपको बताते हैं कि आपके मन के अन्दर एक आग लगी है। ये आपको बताते हैं कि आप कार्य को करने के द्वारा ऐसा कुछ पाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसे केवल यीशु ही दे सकता है।

इसका हल, सन्तुलित रहने के लिए, केवल “अधिक प्रयास” करना ही नहीं है। इसका हल पछतावा करना है।

हमें यह अंगीकार करना होगा कि हमने अपने सृजनहार से अधिक अपने व्यवसायों से प्रेम किया है। हमें यह अंगीकार करना होगा कि हमने अपने प्रदाता से अधिक अपनी आय पर भरोसा किया है।

और फिर, हमें मसीह की ओर देखने की आवश्यकता है।

यीशु ही वह एकमात्र व्यक्ति है जिसने कार्य को पूरा किया है। क्रूस पर, उसने कहा, “पूरा हुआ” (यूहन्ना 19:30)।

उद्धार का कार्य पूरा हो चुका है। आपको जगत में अपना स्थान अर्जित करने की आवश्यकता नहीं है। यह आपको एक उपहार के रूप में दिया गया है।

जब यह सच आपके मन में घर कर जाता है, तब मूर्तियाँ टूटने लगती हैं। आप सोमवार को एक हल्के मन के साथ कार्य पर वापस लौट कर जा सकते हैं। आप बस कार्य को करने, अपने पड़ोसी से प्रेम करने, और यह जानकर घर जाने के लिए स्वतन्त्र होते हैं, कि आप परमेश्वर के हैं।

3

“धर्मनिरपेक्ष” कार्य वाला मिथक

पास्टर बनाम प्लंबर

मसीही मस्तिष्क में एक क्रम है, जिसे तोड़ना कठिन है।

हम मसीहियों को एक पिरामिड के आकार में सोचते हैं। सबसे ऊपर वे प्रचारक होते हैं, जो जंगल में चले जाते हैं। उनके ठीक नीचे पास्टर और आराधना करने वाले अगुवे होते हैं। फिर, सम्भवतः, मसीही गैर-लाभ वाली संस्थाओं के कर्मचारी आते हैं।

और फिर, सबसे नीचे, बाकी सब हैं। लेखपाल, ट्रक ड्राइवर, नौकर-चाकर, डेंटिस्ट।

हमें लगता है कि केवल सबसे ऊपर के लोग ही परमेश्वर का “सच्चा” कार्य कर रहे हैं। वे “पूरे समय की सेवकाई” में हैं। हम बाकी लोग बस उनकी सहायता करने के लिए बिल भर रहे होते हैं।

हम यह मान लेते हैं कि यदि आप सच में यीशु से प्रेम करते, तो आप सेमिनरी में जाते। यदि आप सच में परमेश्वर की सेवा करना चाहते, तो आप अपनी नौकरी को छोड़ देते और कलीसिया में कार्य करते।

मैं आपको स्पष्ट रूप से बताना चाहता हूँ: यह एक झूठ है।

यह एक ऐसा झूठ है, जिसने सदियों से कलीसिया को अपंग बना रखा है। यह बताता है कि जीवन की दो श्रेणियाँ हैं: “पवित्र” (प्रार्थना, धर्म का प्रचार, कलीसिया) और “धर्मनिरपेक्ष” (व्यापार, कला, राजनीति, मानवीय परिश्रम)।

प्रोटेस्टेंट सुधार-वाद ने इस दीवार को तोड़ देने के लिए बहुत संघर्ष किया।

सुधार-वाद से पहले, कलीसिया सिखाती थी कि एक सच्चा पवित्र जीवन जीने का एकमात्र तरीका एक सन्यासी या एक सन्यासिन बनना है। परमेश्वर के करीब जाने के लिए आपको संसार से दूर होना पड़ेगा।

जर्मन सुधारक, मार्टिन लूथर, ने बाइबल को देखा और कहा, “नहीं!”

उसने “सभी विश्वासियों का याजक होना” सिखाया। उसने यह तर्क दिया कि गाय का दूध निकालने वाली गौशाला की एक सेविका भी परमेश्वर की उतनी ही महिमा कर सकती है, जितना कि एक पास्टर जो प्रचार मंच पर है।

क्यों? क्योंकि गौशाला की एक सेविका का कार्य परमेश्वर का कार्य है। परमेश्वर चाहता है कि गाय का दूध निकाला जाए। परमेश्वर चाहता है कि लोगों को भोजन मिले। जब वह अपना कार्य करती है, तब वह परमेश्वर के हाथों में होती है, उसकी बनाई सृष्टि को भोजन खिलाती है।

लूथर ने लिखा, “सन्यासियों और याजकों के कार्य, चाहे वे कितने भी पवित्र और श्रम वाले ही क्यों न हों, परमेश्वर की दृष्टि में खेत में कार्य करने वाले गाँव के श्रमिक या घर के कार्य करने वाली महिला के कार्यों से थोड़े भी भिन्न नहीं होते हैं।”

इस से न चूकें। परमेश्वर की दृष्टि में, उपदेश और आवटित कार्य आत्मिक रूप से भिन्न नहीं हैं। हाँ, वे भिन्न-भिन्न कार्य हैं। परन्तु एक दूसरे से “पवित्र” नहीं है।

दोनों ही विश्वास के साथ किए जा सकते हैं। दोनों ही कार्य परमेश्वर की महिमा के लिए किए जा सकते हैं। दोनों ही कार्यों को प्रेम के कार्य की रीति से किया जा सकता है।

यदि आप एक प्लंबर हैं, तो आप एक द्वितीय-श्रेणी के मसीही नहीं हैं। आप मसीह के एक सेवक हैं, जो लोगों के लिए ताज़ा पानी और साफ़-सफ़ाई लेकर आते हैं। आप बीमारियों से बचाते हैं। आप अव्यवस्था में व्यवस्था को लेकर आते हैं।

यही राज्य का कार्य है।

साधारण की पवित्रता

हम इससे इसलिए जूझते हैं, क्योंकि हम मन से ज्ञानवादी होते हैं।

ज्ञानवाद एक पुरानी झूठी शिक्षा थी, जो सिखाती थी कि भौतिक संसार बुरा था और आत्मिक संसार अच्छा था। ज्ञानवादियों का मानना था कि परमेश्वर को देह, भोजन, या इमारतों की परवाह नहीं थी - वह केवल आत्माओं की परवाह करता था।

आज भी हम इस फन्दे में फँस जाते हैं। हमें लगता है कि परमेश्वर केवल बाइबल अध्ययन और प्रार्थना जैसी “आत्मिक” बातों की परवाह करता है। हमें लगता है कि वह इस बात से बेपरवाह है कि हम कैसे पुल बनाते हैं या कैसे रोटी पकाते हैं। परन्तु कार्य का बाइबल आधारित दृष्टिकोण इस भ्रान्ति को यह दिखाकर ठीक करता है कि परमेश्वर ने आत्मिक और भौतिक दोनों संसार बनाए हैं और दोनों में ही आनन्दित होता है।

परन्तु बाइबल को देखिए।

परमेश्वर ने एक भौतिक संसार को बनाया। उसने इसे “बहुत ही अच्छा” कहा। उसने मूसा को एक तम्बू बनाने के विषय में विस्तार से बताया - जिसमें सोना, लकड़ी, कपड़ा, और तेल सम्मिलित थे। उसे कारीगरी की परवाह थी (निर्गमन 31)।

यीशु मसीह ने एक देह धारण की। उसने मछली खाई। वह कच्ची सड़कों पर चला। उसने कोढ़ियों को छुआ। वह एक भौतिक देह में ही फिर से जी उठा।

परमेश्वर भौतिक संसार से प्रेम करता है। उसने इसे बनाया है। इसलिए, भौतिक वस्तुओं के साथ कार्य करना एक आत्मिक कार्य है। जब एक बड़ई एक मेज़ को बना रहा होता है, तो वह परमेश्वर की बनाई गई लकड़ी के साथ कार्य कर रहा होता है। जब एक महिला वैज्ञानिक कोशिका का अध्ययन कर रही होती है, तब वह परमेश्वर के हाथों के कार्य को देख रही होती है।

कार्य पर बाइबल का दृष्टिकोण हमें यह समझने में सहायता करता है कि सामान्य ही पवित्र है। एक मसीही के लिए “धर्मनिरपेक्ष” कार्य जैसी कोई वस्तु नहीं होती है। जो कुछ भी हम करते हैं, वह परमेश्वर की उपस्थिति में करते हैं।

भाई लॉरेंस, जो कि 17वीं सदी के एक सन्यासी थे और एक रसोई में कार्य करते थे, वे बर्तनों के शोर के बीच भी “परमेश्वर की उपस्थिति” का अभ्यास करते थे। उन्होंने कहा, “मेरे लिए कार्य का समय प्रार्थना के समय से भिन्न नहीं है; और मेरी रसोई के शोर और खट-पट में... मैं परमेश्वर को उतनी ही शांति से अनुभव करता हूँ, जितना मैं पवित्र संस्कार के समय घुटनों के बल बैठा करता हूँ।”

आप कोडिंग करते समय परमेश्वर से सहभागिता कर सकते हैं। आप वेल्डिंग करते समय आराधना कर सकते हैं। कार्य के विषय में बाइबल का दृष्टिकोण सिखाता है कि हम “आत्मिक” पलों की प्रतीक्षा करना बंद कर दें और यह समझें कि सामान्य पल ही वे होते हैं, जिनमें हम अपने विश्वास को जीकर दिखाते हैं।

व्यवसाय की अवधारणा

यदि हर कार्य महत्व रखता है, तो हमें कैसे पता चलेगा कि हमें क्या करना चाहिए?

यह हमें व्यवसाय के सिद्धान्त पर लाता है।

“वोकेशन” अर्थात् व्यवसाय शब्द लैटिन शब्द *वोकारे* से आया है, जिसका अर्थ “बुलाहट” है।

एक बहुत लंबे समय तक, लोगों को लगता था कि “बुलाहट” एक रहस्यमय अनुभव था, जहाँ परमेश्वर आपको याजक बनने के लिए कहता था।

परन्तु सुधारकों ने बाइबल की इस सच्चाई को फिर से पाया कि हर सही कार्य एक बुलाहट है।

परमेश्वर लोगों को किसान बनने के लिए बुलाता है। वह लोगों को न्यायाधीश बनने के लिए बुलाता है। वह लोगों को माता और पिता बनने के लिए बुलाता है।

आप अपनी बुलाहट को कैसे जानते हैं? सामान्यतः यह कोई स्वर्ग से आई ध्वनि नहीं होती है। यह तीन वस्तुओं का मेल होती है:

1. आपकी प्रतिभा: आप किसमें अच्छे हैं? परमेश्वर ने आपको विशेष उपहार दिए हैं। यदि आप गणित में बहुत बुरे हैं, तो सम्भवतः आप लेखपाल बनने के लिए नहीं बुलाए गए हैं। यदि आप लहू को देखकर बेहोश हो जाते हैं, तो आप शल्य-चिकित्सक बनने के लिए नहीं बुलाए गए हैं।
2. आपकी अभिलाषा: आपको क्या आनन्दित करता है? बहुधा परमेश्वर हमें हमारे कार्य में पवित्र आनन्द को देता है। कुछ लोगों को बिक्री करने की चुनौती पसंद होती है। दूसरों को ध्यान लगाकर शोध करना पसंद होता है।
3. संसार की आवश्यकता: आपके पड़ोसी को किसकी आवश्यकता है? यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। एक बुलाहट केवल स्वयं की आवश्यकताओं को पूरा करने के विषय में नहीं होती है; यह सेवा करने के विषय में होती है।

यदि आपके पास अभी नौकरी है, तो आप मान सकते हैं कि - इस समय के लिए - यही आपकी बुलाहट है।

परमेश्वर सार्वभौमिक है। वही हमारे जीवन की छोटी-छोटी बातें भी तय करता है। आप आकस्मिक रूप से अपनी मेज़ पर नहीं आए हैं। आप उस भवन निर्माण स्थल पर भाग्य से नहीं आए हैं।

परमेश्वर ने आपको वहाँ पर रखा है।

उसने आपको नमक और ज्योति बनने के लिए वहाँ रखा है। उसने बुराई को रोकने और अच्छाई को बढ़ावा देने के लिए आपको वहाँ रखा है।

पुराने नियम में से यूसुफ की कहानी के विषय में सोचिए। उसे दासत्व में बेच दिया गया था। उसने पोतीपर के घर में कार्य किया। उसने एक कारागार में कार्य किया। अन्ततः, उसने फिरौन के महल में कार्य किया।

यूसुफ शिकायत कर सकता था। वह कह सकता था कि, “यह कोई आत्मिक कार्य नहीं है। मैं तो बस अनाज के भण्डारण के कार्य का प्रबन्धन कर रहा हूँ।”

परन्तु उसने अपना कार्य विश्वासयोग्यता से किया। और क्योंकि उसने ऐसा किया, इसलिए परमेश्वर ने हज़ारों लोगों को भुखमरी से बचाने के लिए उसका उपयोग किया।

परमेश्वर की कृपा में आपके कार्य का एक उद्देश्य है।

हो सकता है कि आप इसे न देख पाएँ। हो सकता है आपको लगे कि आप एक बड़ी मशीन का एक छोटा सा भाग हैं। परन्तु संसार को चलाने के लिए परमेश्वर अपने लोगों के विश्वासयोग्यता भरे कार्यों का उपयोग करता है।

जब आप कोई पैकेज वितरित करते हैं, तब आप व्यापार को आगे बढ़ाने में सहायता कर रहे होते हैं। जब आप किसी सही कानून को बनाते हैं, तब आप दुर्बल लोगों की रक्षा कर रहे होते हैं। जब आप किसी सुंदर चित्र को बनाते हैं, तब आप मन को तरोताज़ा कर रहे होते हैं।

परन्तु सुसमाचार प्रचार के विषय में क्या?

मैं इस आपत्ति को सुन सकता हूँ: “परन्तु क्या आत्माओं को बचाना ही सबसे आवश्यक बात नहीं है? क्या मुझे अपनी नौकरी का उपयोग अपने सहकर्मियों को वचन प्रचार करने के लिए एक मंच के रूप में नहीं करना चाहिए?”

वचन का प्रचार करना बहुत आवश्यक है। हमें सुसमाचार को बाँटने का आदेश दिया गया है। हमें अपने सहकर्मियों के साथ मसीह के विषय में बात करने के लिए खुले द्वारों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

परन्तु हमें यहाँ पर सावधान रहना होगा।

यदि हम अपने कार्य को केवल सुसमाचार के प्रचार के लिए एक मंच के रूप में ही देखते हैं, तो हम कार्य के ही महत्व को कम कर देते हैं।

एक मसीही शल्य-चिकित्सक की कल्पना करें। शल्य-चिकित्सा से पहले, वह रोगी के साथ प्रार्थना करता है। यह अच्छा है। परन्तु उसके पश्चात्, शल्य-चिकित्सा के दौरान, वह ढीला पड़ जाता है। वह ध्यान नहीं देता है। वह एक गलती कर देता है।

क्या इससे परमेश्वर की महिमा होती है? नहीं।

परमेश्वर की महिमा तब होती है, जब शल्य-चिकित्सक देह को सीधा काटकर चंगा कर देता है।

यदि आप एक मसीही पायलट हैं, तो परमेश्वर की महिमा करने का सबसे अच्छा तरीका हवाई जहाज़ को सुरक्षित रूप से उतारना है। यदि आप इंटरकॉम पर परमेश्वर के सुसमाचार को बाँटते हैं, परन्तु जहाज़ को टकरा देते हैं, तो आपने अपने पड़ोसी की अच्छी से सेवा नहीं की है।

हम कार्य को अच्छे से करके परमेश्वर की महिमा करते हैं।

बहुधा हमारी क्षमता ही हमें बोलने का अवसर प्रदान करती है। हमारी उत्तमता कभी भी किसी को भी बचाती नहीं है, परन्तु यह सुसमाचार को सुनने में आने वाली अनावश्यक बाधाओं को दूर कर देती है। जब लोग देखेंगे कि आप मेहनती, विश्वासयोग्य, और निपुण हैं, तब वे आपका आदर करेंगे। वे अचरज करेंगे कि आप भिन्न क्यों हैं।

पतरस हमसे कहता है कि “अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो” ताकि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर उन्हीं के कारण कृपा-दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें (1 पतरस 2:12)।

आपका कार्य ही वह प्रमुख तरीका है, जिससे आप संसार को दिखाते हैं कि परमेश्वर कैसा है।

यदि आप आलसी हैं, तो आप संसार को यह बताते हैं कि परमेश्वर सेवा करने योग्य नहीं है। यदि आप कपटी हैं, तो आप संसार को बताते हैं कि परमेश्वर झूठा है।

परन्तु यदि आप सर्वश्रेष्ठ, दयालु, और विश्वासयोग्य हैं, तो आप सुसमाचार से सुसज्जित हैं। आप यीशु के विषय में सच्चाई को सुंदर बनाते हैं।

इसलिए, अपनी “धर्मनिरपेक्ष” नौकरी से घृणा न करें। ऐसा न सोचें कि आपको कहीं और होना चाहिए था।

अपनी बुलाहट में उत्तमता से खड़े रहें। चाहे आप झाड़ू लगा रहे हों या कोई निगम चला रहे हों, आप एक पवित्र भूमि पर खड़े हैं। आप परमेश्वर के संसार में एक याजक हैं, जो अपने परिश्रम को प्रशंसा के बलिदान के रूप में चढ़ा रहा है।

4

एक मसीही के समान कार्य को कैसे करें (व्यावहारिक कौशल)

गवाह के रूप में श्रेष्ठता

हमने यह स्थापित कर लिया है कि कार्य करना अच्छा होता है, यह परमेश्वर के लिए महत्व रखता है, और यह अपने पड़ोसी से प्रेम करने का एक तरीका है।

अब हमें व्यावहारिक होने की आवश्यकता है। मंगलवार की दोपहर को यह वास्तव में कैसा दिखता है?

कार्यस्थल पर एक मसीही के कार्य करने का पहला और सबसे आवश्यक तरीका है, सर्वश्रेष्ठ बनने का यत्न करना।

कुछ मसीही गुटों का एक अनोखा विचार है कि क्योंकि हम “अगले संसार” की चिन्ता करते हैं, इसलिए हमें इस संसार की अधिक चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हम सोच सकते हैं कि, “ठीक है, संसार समाप्त हो ही रहा है, इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह रिपोर्ट एकदम सही है या नहीं,” या फिर “यीशु वापस आ रहा है, तो किसे फर्क पड़ता है कि रंगने का कार्य थोड़ा बुरा हुआ है?”

यह धर्म-विज्ञान बहुत बुरा है।

यदि हम एक श्रेष्ठता के परमेश्वर की सेवा करते हैं - एक ऐसा परमेश्वर जिसने तितली के पंख और एकदम सटीक रीति से ग्रहों के कक्षों की रचना की है - तो हमारे कार्य में भी वह श्रेष्ठता दिखनी चाहिए।

सर्वश्रेष्ठता गवाही का एक रूप होती है।

कल्पना करें कि आपका डेव नामक एक सहकर्मी है। डेव की कार पर “यीशु बचाता है” लिखा बम्पर स्टिकर लगा हुआ है। वह अपनी मेज़ पर आराधना के संगीत बजाता है। वह सभी को ईस्टर सेवा के लिए बुलाता है।

परन्तु डेव अपने कार्य में बहुत बुरा है। वह सदा देरी से आता है। वह समय सीमा से चूक जाता है। उसका कार्य बहुत ढीला है। वह अपनी गलतियों के लिए दूसरों को दोषी ठहराता है।

डेव कार्यालय में यीशु के विषय में क्या सिखाता है?

वह उन्हें सिखाता है कि मसीही लोग आलसी होते हैं। वह उन्हें सिखाता है कि परमेश्वर गुणवत्ता की चिन्ता नहीं करता है। उसकी अयोग्यता सुसमाचार के लिए एक बाधा बन जाती है। जब वह अपने विश्वास को साझा करने का प्रयास करता है, तो लोग अपनी आँखें घुमाने लगते हैं।

अब सारा नामक एक सहकर्मी के विषय में सोचिए। उसके पास कोई बम्पर स्टिकर नहीं है। पहले वह अपने विश्वास के विषय में शान्त रहती है।

परन्तु सारा दल में सबसे विश्वासयोग्य व्यक्ति है। जब वह कहती है कि वह कुछ करेगी, तो वह उसे करती है। उसका कार्य सटीक होता है। वह समस्याओं का पूर्वानुमान लगा लेती है। वह सहायक है।

जब सारा अन्ततः यीशु के विषय में बोलती है, तो लोग सुनते हैं। वे उसका सम्मान करते हैं। उसकी योग्यता ने उसकी गवाही के लिए एक मंच बना दिया है।

नीतिवचन 22:29 कहता है कि, “यदि तू ऐसा पुरुष देखे जो कामकाज में निपुण हो? तो वह राजाओं के सम्मुख खड़ा होगा; छोटे लोगों के सम्मुख नहीं।”

कौशल महत्व रखता है। योग्यता महत्व रखती है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि आपको सर्वोच्च अधिकारी बनना है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आपको कमरे में सबसे बुद्धिमान व्यक्ति बनना है। इसका सरल सा अर्थ यह है कि आप अपने विशेष कार्य को अपनी पूरी योग्यता के साथ करें।

यदि आप एक सफाई कर्मचारी हैं, तो आप इमारत में सबसे अच्छे सफाई कर्मचारी बनें। उन फर्शों को चमका दें। यदि आप एक विद्यार्थी हैं, तो उस निबन्ध को ध्यान से लिखें। अपनी व्याकरण की जाँच करें। यदि आप एक कोडर हैं, तो साफ कोड लिखें।

हम ऐसा दिखावा करने के लिए नहीं, परन्तु सेवा करने के लिए करते हैं। बुरा कार्य हमारे पड़ोसी पर बोझ डालता है। अच्छा कार्य हमारे पड़ोसी को आशीष देता है।

मसीही होने के नाते, हमें ऐसे कर्मचारी बनना चाहिए, जिन्हें रखने के लिए अधिकारी लड़ते हैं। हमें ऐसे ठेकेदार बनना चाहिए, जिन्हें घर के स्वामी अपने मिलों को अनुशंसित करें। सर्वश्रेष्ठ होने की हमारी प्रतिष्ठा इतनी दृढ़ होनी चाहिए कि लोग उस परमेश्वर के विषय में जानने को उत्सुक हो जाएँ, जिसकी हम सेवा करते हैं।

अस्पष्ट क्षेत्रों में विश्वासयोग्यता

कार्यक्षेत्र अस्पष्ट क्षेत्रों से भरा हुआ होता है। यह कार्य में कन्नौ काटने, गिनती में हेराफेरी करने, या सच को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करने के अवसरों से भरा हुआ होता है।

यहीं पर मसीही चरित्र की परीक्षा होती है।

हम एक सत्य के परमेश्वर पर विश्वास करते हैं। यीशु ने स्वयं को “सत्य” कहा (यूहन्ना 14:6)। इसलिए, एक मसीही को पूर्णतः विश्वासयोग्य व्यक्ति होना चाहिए।

इसे कहना सरल है, परन्तु जब पैसा या प्रतिष्ठा दाँव पर हो तो करना कठिन होता है।

जब आप कोई ऐसी भूल करते हैं, जिससे संगठन को आर्थिक नुकसान होता है, तब क्या आप उसे मान लेते हैं? या क्या आप उसे छिपाने का प्रयास करते हैं? जब आप कोई उत्पाद बेच रहे होते हैं, तब क्या आप उसकी कमियाँ बताते हैं? या क्या आप दलाली प्राप्त करने के लिए तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं? जब आप अपनी व्यय की रिपोर्ट भरते हैं, तब क्या आप ईमानदार होते हैं? या क्या आप सँख्या को इसलिए बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, क्योंकि “बाकी सब भी ऐसा ही करते हैं”?

कर्तव्यनिष्ठा का अर्थ है कि जब कोई भी देख नहीं रहा हो, तब भी सही कार्य को करना।

परन्तु एक मसीही के लिए, एक है, जो हमेशा देख रहा होता है।

हम क्रोरम देओ जीवन जीते हैं – अर्थात् परमेश्वर के मुख के सम्मुख। हम जानते हैं कि परमेश्वर गुप्त ई-मेल देखता है। वह छिपे हुए अकाउंट देखता है।

यह दृढ़ विश्वास लालच का सामना करने में हमारी सहायता करता है। हम जानते हैं कि एक दोषरहित विवेक एक बोनस चेक से कहीं अधिक बहुमूल्य होता है।

कर्तव्यनिष्ठा का एक विशेष स्थान जिसे हम बहुधा अनदेखा कर देते हैं, वह समय की चोरी करना है।

यदि आपका नियोक्ता आपको आठ घंटे कार्य करने के पैसे देता है, और आप दो घंटे सोशल मीडिया देखने में, ऑनलाइन खरीददारी करने में, या मित्रों से बातें करने में बिताते हैं, तो आप चोरी कर रहे हैं। आप उस कार्य के पैसे ले रहे हैं, जो आपने किया ही नहीं है।

हम बहुधा इसे उचित ठहराते हैं। हम कहते हैं कि, “मेरा स्वामी मुझे पर्याप्त पैसे नहीं देता है।” या, “मैं अपना कार्य शीघ्र कर लेता हूँ, इसलिए कोई फ़र्क नहीं पड़ता है।”

परन्तु बाइबल हमें थोड़े से थोड़े में भी सच्चा रहने के लिए बुलाती है (लूका 16:10)।

मसीहियों को ऐसे व्यक्ति होना चाहिए, जो पूरे दिन के परिश्रम के बदले पूरे दिन का वेतन लेते हैं। हमें ऐसे व्यक्ति होना चाहिए, जो सच बोलते हैं, भले ही इस से दुःख पहुँचे।

इस प्रकार की कट्टर ईमानदारी बहुत कम देखने को मिलती है। छल और कपट के संसार में, कर्तव्यनिष्ठा अंधेरे में रोशनी के समान दिखती है।

कठिन अधिकारी और परेशान करने वाला सहकर्मी

यदि लोग न होते तो कार्य बहुत अच्छा होता।

हम आवंटित कार्यों और थलों को तो संभाल सकते हैं। ये तो बारीकी से-प्रबन्धन करने वाला अधिकारी, गपशप करने वाला सहकर्मी, या असभ्य ग्राहक ही हैं जो हमें नौकरी छोड़ने पर विवश करते हैं।

हम कार्यस्थल पर कठिन सम्बन्धों को कैसे संभालते हैं?

हमें अपने पाप के धर्म-विज्ञान से आरम्भ करना चाहिए। सुधारवादी धर्म-विज्ञान सिखाता है कि मनुष्य “पूर्ण रूप से बिगड़े हुए” हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर कोई उतना बुरा है, जितना वह हो सकता है, परन्तु इसका अर्थ यह है कि हमारा हर भाग पाप से भरा हुआ है।

इसलिए, जब कार्य पर लोग स्वार्थी, गुस्सैल, या अयोग्य होते हैं, तब हमें हैरान नहीं होना चाहिए। हम पापियों के साथ कार्य कर रहे हैं। और हम भी, पापी ही हैं।

तो, हम प्रतिक्रिया कैसे देते हैं?

1. हम अधीनता के साथ प्रतिक्रिया देते हैं।

यह एक कठिन शब्द है। परन्तु बाइबल स्पष्ट है।

पतरस लिखता है, “हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो, न केवल उनके जो भले और नम्र हों पर उनके भी जो कुटिल हों” (1 पतरस 2:18)।

पतरस उन सेवकों को लिख रहा था, जिनके कोई अधिकार नहीं थे। फिर भी उसने उनसे कहा कि वे अधीन रहें - उनके भी, जो कुटिल हों।

यह आज हम पर भी लागू होता है। यदि आपका अधिकारी कठिन है, तो आपको उनके पद का आदर करने के लिए बुलाया गया है, भले ही आप उनके चरित्र का आदर न भी करते हों। आप अपनी आँखें नहीं घुमाते हैं। आप विश्राम कक्ष में उनकी बुराई नहीं करते हैं। आप वही करते हैं, जो वे कहते हैं (जब तक कि यह पापमय न हो)।

हम ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि हम परमेश्वर की संप्रभुता पर भरोसा करते हैं। परमेश्वर ने उस अधिकारी को आपके ऊपर किसी कारण से रखा है। हो सकता है कि वह आपको धीरज सिखाने के लिए उनका उपयोग कर रहा हो। हो सकता है कि वह आपको विनम्र बनाने के लिए उनका उपयोग कर रहा हो।

2. हम शालीनता से प्रत्युत्तर देते हैं।

कार्यस्थल बहुधा जाँचे जाने का स्थान होता है। यदि कोई कुछ गलती करता है, तो उसे डाँट पड़ती है। यदि कोई दुर्बल है, तो उसे किनारे धकेल दिया जाता है।

मसीही लोग कार्यालय में शालीनता लाते हैं।

हम वैसे लोग हैं, जो क्षमा करते हैं। जब कोई सहकर्मी हम पर क्रोध करता है, तो हम पलटकर क्रोध नहीं करते हैं। हम यह अनुमान लगा लेते हैं कि हो सकता है कि उनका दिन अच्छा नहीं जा रहा होगा।

हम वैसे लोग हैं, जो गपशप नहीं मारते हैं। जब दल सूजन के विषय में शिकायत करने के लिए एकत्रित होता है, तो हम वहाँ से चले जाते हैं, या हम उसके विषय में कुछ अच्छा बोलते हैं।

हम मेल मिलाप करने वाले हैं। रोमियों 12:18 कहता है कि, “जहाँ तक हो सके, तुम भरसक, सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।”

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम दूसरों को हमारे साथ पायदान के समान व्यवहार करने देते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हम गलत व्यवहार या गैर-कानूनी व्यवहार को सहते रहते हैं। विरोध में बोलने का, अधिकारी के पास जाने का, या नौकरी को छोड़ देने का समय भी होता है।

परन्तु हमारा सामान्य रवैया नम्रता ही का होता है। हम सफ़ाई कर्मचारी के साथ भी वैसे ही आदर का व्यवहार करते हैं, जैसे कि सर्वोच्च अधिकारी के साथ करते हैं। हम लोगों की आँखों में आँखें मिलाकर देखते हैं। हम सुनते हैं।

3. हम प्रार्थना के साथ प्रत्युत्तर देते हैं।

क्या आप अपने सहकर्मियों के लिए प्रार्थना करते हैं?

उनके विषय में शिकायत करना आसान होता है। परन्तु उनके लिए प्रार्थना करना बहुत कठिन होता है।

परन्तु यीशु ने हमसे कहा कि “अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो” (मत्ती 5:44)।

यदि आपका कोई अधिकारी है, जो आपके जीवन को कठिन बना रहा है, तो उसके लिए प्रार्थना करें। उसके परिवार के लिए प्रार्थना करें। उसके उद्धार के लिए प्रार्थना करें। जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं, उससे घृणा करना बहुत कठिन होता है।

हमें “परेशान करने वाले सहकर्मी” को अपने कार्य में रुकावट के रूप में नहीं, परन्तु अपने कार्य के उद्देश्य के रूप में समझना चाहिए।

हो सकता है कि परमेश्वर ने आपको उस कार्यालय में केवल कोड लिखने के लिए ही नहीं, परन्तु बगल वाले छोटे से कक्ष में उस व्यक्ति को मसीह का प्रेम दिखाने के लिए भेजा हो जो तलाकसे होकर जा रहा है। हो सकता है कि यह कार्य केवल सम्बन्ध की वास्तविक सेवकाई के लिए एक परिस्थिति हो।

एक चिन्ता-मुक्त उपस्थिति बनना

अन्ततः, एक सबसे अच्छा कौशल जो एक मसीही कार्य पर ला सकता है, वह एक चिन्ता-मुक्त उपस्थिति है।

कार्यस्थलों पर चिन्ता बढ़ जाती है। लोग लक्ष्य को पूरा न कर पाने से घबराते हैं। उन्हें नौकरी से निकाले जाने की चिन्ता रहती है। वे समय-सीमा को लेकर चिन्तित रहते हैं।

इस तूफान के बीच में, मसीही को एक चट्टान के समान खड़ा होना चाहिए।

क्यों? क्योंकि हमारी आशा तिमाही वाली कमाई रिपोर्ट पर नहीं है। हमारी आशा प्रभु में है।

हम जानते हैं कि परमेश्वर नियन्त्रण में है। हम जानते हैं कि भविष्य उसके हाथों में है।

जब बाकी सब लोग घबरा रहे हों, हम शान्त रह सकते हैं। हम स्पष्ट रूप से सोच सकते हैं। हम लोगों को स्मरण दिला सकते हैं कि आसमान गिर नहीं रहा है।

यह शान्ति अलौकिक है। यह पवित्र आत्मा से आती है। और यह अविश्वसनीय रूप से आकर्षक है।

लोग आपके पास आयेंगे और पूछेंगे, “आप इतने शान्त कैसे रहते हैं?”

और इससे आपको उन्हें शांति के राजकुमार के विषय में बताने का अवसर मिलता है।

5

विश्राम और कार्य का अंत

रुकने का आदेश

हमने कड़ा परिश्रम करने के विषय में बहुत बात की है। हमने लगन, सर्वश्रेष्ठ कार्य, और लगे रहने के विषय में बात की है। परन्तु यदि हम केवल कार्य के विषय में बात करते हैं, तो हम आधी बात को अनदेखा कर देते हैं। परमेश्वर ने केवल कार्य ही को नहीं बनाया है। उसने विश्राम को भी बनाया है।

उत्पत्ति 1 में, परमेश्वर ने छः दिनों तक कार्य किया। उसने पहाड़ बनाए। उसने समुद्रों को भरा। उसने पुरुष और स्त्री की रचना की। यह कार्य की एक हलचल है।

और फिर, उत्पत्ति 2:2 में, बाइबल कहती है कि: “और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।” विश्राम करने की यह लय कार्य पर बाइबल के दृष्टिकोण का आधार है, जो कि हमें यह स्मरण दिलाता है कि परिश्रम और विश्राम दोनों ही परमेश्वर की ओर से उपहार हैं, न कि एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धी प्राथमिकताएँ।

यह चकित करने वाली बात है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। उसके पास असीमित सामर्थ्य है। वह थकता नहीं है। उसकी माँसपेशियों में दर्द नहीं होता है। उसे झपकी लेने की आवश्यकता नहीं होती है।

तो फिर उसने विश्राम क्यों किया?

उसने हमारे लिए एक स्वरूप स्थापित करने के लिए विश्राम किया। उसने जगत के ताने-बाने में एक लय: कार्य और विश्राम को बनाया। छः दिन का परिश्रम, एक दिन का विश्राम। तत्पश्चात्, जब परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएँ दीं, तब उसने इस लय को एक आज्ञा बना दिया।

“तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है” (निर्गमन 20:8-10)। यह आज्ञा कार्य पर बाइबल के दृष्टिकोण के मन को दिखाती है - कि हमारा कार्य सार्थक तो होता है, परन्तु यह कभी भी परम नहीं होता है। केवल परमेश्वर ही परम होता है।

बहुधा हम चौथी आज्ञा को एक सुझाव के समान समझ लेते हैं: “मैं विश्राम करने के लिए बहुत व्यस्त हूँ। मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ है।” परन्तु विश्राम करने से इनकार करना कोई सम्मान का तमगा नहीं है। यह अवज्ञा करना है।

आराम न करना वास्तव में एक प्रकार का घमण्ड होता है। यह ऐसा बर्ताव करना है, जैसे कि हम परमेश्वर हैं। केवल परमेश्वर ही संसार को बिना विश्राम के चला सकता है। जब हम विश्राम करने से मना कर देते हैं, तब हम कह रहे होते हैं, “मैं बहुत आवश्यक हूँ। यदि मैं कार्य करना बन्द कर दूँगा, तो सब कुछ बिखर जाएगा।”

विश्रामदिन एक साप्ताहिक वास्तविकता की जाँच है। यह हमें स्मरण दिलाता है कि हम सृष्टि हैं, सृष्टिकर्ता नहीं। हम सीमित हैं। हमारी सीमाएँ हैं। कार्य पर बाइबल का दृष्टिकोण हमें यह देखने में सहायता करता है कि विश्राम दुर्बलता नहीं है - यह आराधना और विनम्रता है।

जब हम सप्ताह में एक दिन कार्य को करना बन्द कर देते हैं, तब हम परमेश्वर पर अपने भरोसे को दिखाते हैं। हम कह रहे होते हैं कि, “प्रभु, जो मैं कर सकता था मैंने वह कर लिया है। अब मुझे आप पर भरोसा है कि आप बाकी सब का ध्यान रख लेंगे।”

सुधार-वाद की परम्परा में, हम प्रभु के दिन (इतवार) को “आत्मा के लिए एक बाज़ार जाने के दिन” के रूप में देखते हैं। यह वह दिन होता है, जब हम अपने सामान्य कार्यों को रोककर आराधना करने, मेल-मिलाप करने, और दया करने पर ध्यान केंद्रित देते हैं। यह हमारे मनो को फिर से नया करने का दिन होता है।

यदि आप कभी भी कार्य को करना बन्द नहीं करेंगे, तो आपकी आत्मा सिकुड़ जाएगी। आप सूखे और दुर्बल बन जाएँगे। आप अपने आनन्द को खो देंगे। आपको रुकने की आवश्यकता है। आपको फ़ोन को नीचे रख देने की आवश्यकता है। आपको लैपटॉप को बंद कर देने की आवश्यकता है। आपको मसीह के पूरे हुए कार्य में विश्राम करने और उस शारीरिक विश्राम का आनन्द लेने की आवश्यकता है, जिसे वह अपने प्रियजनों को देता है।

सीमाएँ

यदि हम अच्छे से विश्राम करना चाहते हैं, तो हमें सीमाओं की आवश्यकता है।

आधुनिक संसार में, कार्य की कोई सीमाएँ नहीं होती हैं। यह हमारी जेबों में हमारे साथ घर तक पहुँच जाता है। स्मार्टफोन का अर्थ है कि कार्यालय सदा खुला रहता है। आपका अधिकारी आपको रात के 10:00 बजे भी ई-मेल भेज सकता है। कोई ग्राहक आपको शनिवार की सुबह भी सन्देश भेज सकता है।

यदि आप सीमाएँ नहीं बनाते हैं, तो कार्य आपके पूरे जीवन को खा जाएगा।

इससे अपने पड़ोसी से प्रेम करने की आपकी क्षमता समाप्त हो जाती है - विशेषकर, वे पड़ोसी जो आपके घर के अंदर रहते हैं।

यदि आप भौतिक रूप से रात्रि भोजन की मेज़ पर उपस्थित हैं, परन्तु मानसिक रूप से ई-मेल चेक कर रहे हैं, तो आप अपने परिवार से प्रेम नहीं कर रहे हैं। आप उन्हें अनदेखा कर रहे हैं।

यदि आप कार्यस्थल में इतने थक जाते हैं कि अपनी कलीसिया में सेवा करने या किसी मिल को नए स्थान पर रहने जाने के लिए उनकी सहायता नहीं कर सकते हैं, तो आपका कार्य एक मूर्ति बन गया है। इसने वह ऊर्जा ले ली है, जो परमेश्वर और उसके लोगों के लिए है।

हमें “नहीं” कहने की पवित्र कला को सीखने की आवश्यकता है।

हमें एक निर्धारित समय के पश्चात् फ़ोन को “नहीं” कहना होगा। हमें प्रभु के दिन में कार्य करने को “नहीं” कहना होगा। यदि पदोन्नति का अर्थ हमारे परिवार की आत्मिक सेहत को बलिदान करना है, तो हमें उस पदोन्नति को “नहीं” कहना होगा।

इसके लिए विश्वास की आवश्यकता होती है। हमें चिंता होती है कि यदि हम सीमाएँ निर्धारित कर करेंगे, तो हम पीछे रह जायेंगे। हमें चिंता होती है कि हमें नौकरी से बाहर निकाल दिया जाएगा।

परन्तु स्मरण रखें कि आपकी आवश्यकताएँ कौन पूरी करता है। वह आपका कार्यालय नहीं है। वह परमेश्वर है।

भजन संहिता 23 कहता है कि, “यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे कुछ घटी न होगी।”

यदि प्रभु आपका चरवाहा है, तो वह सुनिश्चित करेगा कि आपको वह सब मिल जाए, जिसकी आपको आवश्यकता है। आपको जीवित रहने के लिए 24/7 भागदौड़ करने की आवश्यकता नहीं है। आप कड़ा परिश्रम कर सकते हैं, घर जा सकते हैं, और चैन से सो सकते हैं।

सीमाएँ निर्धारित करना आपको एक बेहतर कार्यकर्ता भी बनाता है।

शोधों से पता चलता है कि जो लोग कभी विश्राम नहीं करते हैं, वे वास्तव में कम कार्य कर पाते हैं। वे अधिक गलतियाँ करते हैं। वे कम रचनात्मक होते हैं। वे अत्याधिक थकित हो जाते हैं।

परमेश्वर जानता है कि उसने हमें कैसे बनाया है। उसने हमें ऐसा बनाया है कि हमें सोने की आवश्यकता हो। उसने हमें ऐसा बनाया है कि हमें खेलने की आवश्यकता हो। उसने हमें ऐसा बनाया है कि हमें आराधना करने की आवश्यकता हो।

जब हम परमेश्वर की बनावट का सम्मान करते हैं, तब हम फलते-फूलते हैं।

अनन्तकाल वाला शहर

अन्ततः, हमें इस विषय में बात करनी होगी कि यह सब कहाँ पर जा रहा है।

कार्य का भविष्य क्या है?

कुछ मसीही सोचते हैं कि स्वर्ग एक सदाकाल के लिए चलने वाली कलीसियाई सभा जैसा होगा। वे कल्पना करते हैं कि हम सफेद कपड़े पहने हुए, बादलों पर तैरेंगे, और सदाकाल के लिए भजनों को गावेंगे।

यदि स्वर्ग के विषय में आपका यही दृष्टिकोण है, तो कार्य करना क्षणिक और अर्थहीन लगता है। आप सोच सकते हैं कि, “मैं बस यह नौकरी तब तक के लिए कर रहा हूँ, जब तक कि मैं अपने वास्तविक जीवन में नहीं पहुँच जाता, जहाँ मुझे कुछ नहीं करना होगा।”

परन्तु बाइबल हमें एक अलग चित्र दिखाती है।

बाइबल बादलों पर नहीं, परन्तु एक शहर में समाप्त होती है - नया यरूशलेम जो नई पृथ्वी पर उतर रहा है (प्रकाशितवाक्य 21)।

शहर संस्कृति, वास्तुकला, और गतिविधि के स्थान होते हैं।

नई पृथ्वी में, श्राप समाप्त हो जाएगा। वहाँ और काँटे और ऊँटकटारे नहीं होंगे। वहाँ और निराशा नहीं होगी, पसीना नहीं आएगा, थकान नहीं होगी।

परन्तु सेवा तो होगी।

प्रकाशितवाक्य 22:3 कहता है कि, “उसके दास उसकी सेवा करेंगे।” “आराधना करने” के लिए इस शब्द का अनुवाद बहुधा “सेवा करना” के रूप में किया जाता है।

हम परमेश्वर की सेवा करेंगे। हम उसके साथ राज्य करेंगे।

विचार करें कि आदम को क्या करना था। उसे संसार की जाँच-पड़ताल करनी थी, उसे विकसित करना था, और उसे परमेश्वर की महिमा से भरना था। परन्तु पाप ने उसे रोक दिया।

नई पृथ्वी में, दूसरा आदम (यीशु) हमें हमारे वास्तविक उद्देश्य पर लौटा ले आता है।

प्रवृत्तशास्त्र सिखाता है कि हम मसीह के साथ सेवा करेंगे और राज्य करेंगे - यह कैसा दिखेगा, हम पूर्ण रीति से नहीं जानते हैं। परन्तु यह एक नौकरी जैसा नहीं लगेगा। यह आनन्द जैसा लगेगा।

कल्पना कीजिये कि आप बिना प्रेरणा के समाप्त हुए कला को बनाते जायेंगे। कल्पना कीजिये कि आप ऐसे ढाँचे बनाते जायेंगे, जो कभी सड़ेंगे नहीं। कल्पना कीजिये कि आप बिना थके विश्व की जाँच पड़ताल करेंगे। कल्पना कीजिये कि आप दूसरों के साथ बिना जलन या राजनीति के, पूरे सामन्जस्य के साथ कार्य को करेंगे।

इससे अब हमारे कार्य को देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है।

आज का हमारा कार्य “पहला फल” है। यह एक प्रशिक्षण अभ्यास करना है।

जब आप आज कुछ अच्छा बनाते हैं, तब आप भविष्य की प्रतिध्वनि कर रहे हैं। जब आप आज अव्यवस्था में व्यवस्था को लेकर आते हैं, तब आप नई सृष्टि के एक छोटे से दृष्टान्त को निभा रहे होते हैं।

आपका कार्य केवल मरने तक बिल भरने के विषय में ही नहीं है। यह अनन्तकाल के लिए अभ्यास करने के विषय में है। यह उन तोड़ों को विकसित करने के विषय में है, जिन्हें परमेश्वर ने आपको दिया है, ताकि आप उनका उपयोग अनन्तकाल के लिए उसकी महिमा को करने के लिए कर सकें।

इससे हमें आशा मिलती है।

वह परियोजना जिसे आप पूरा नहीं कर पा रहे हैं? नई पृथ्वी में, वह पूरी हो जाएगी। वह न्याय जिसके लिए आप लड़ रहे हैं, परन्तु उसे प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं? नई पृथ्वी में, न्याय पानी के समान बहेगा। वह सुंदरता जिसे आप बनाने का प्रयास करते हैं, परन्तु वह कम पड़ जाती है? नई पृथ्वी में, सब कुछ सुंदर होगा।

उस आने वाले राज्य की आशा में हम आज कार्य करते हैं।



निष्कर्ष

हमने बहुत सारे विषयों पर चर्चा की है।

हमने अलार्म घड़ी और सोमवार की सुबह के भय से आरम्भ किया। हमने पहले कार्यकर्ता के रूप में परमेश्वर को देखा। हमने यह अंगीकार किया कि पाप के कारण से कार्य टूट चुका है, परन्तु हमने यह भी देखा कि मसीह इसे छुड़ाता है।

हमने अपने मनों की मूर्तियों को देखा - अपने लिए नाम को बनाने की इच्छा या आलसी होने का लालच।

हमने इस मिथक को तोड़ा कि “धर्मनिरपेक्ष” कार्य का कोई भी महत्व नहीं होता है, और हमने देखा कि हर सही नौकरी परमेश्वर की ओर से एक बुलाहट है।

और हमने देखा कि कार्य को वास्तव में कैसे करना चाहिए - सर्वश्रेष्ठता के साथ, कर्तव्यनिष्ठा के साथ, और शालीनता के साथ - अन्ततः परमेश्वर की योजना पर भरोसा करने के साथ।

तो, अब हम यहाँ से कहाँ जाएँ?

कल सुबह, अलार्म फिर से बजेगा।

आपको उठना पड़ेगा। आपको कार्य पर जाना पड़ेगा। आपको उस कठिन अधिकारी या उस चकरा देने वाले आवंटित कार्य से निपटना पड़ेगा।

परन्तु अब आप इसे अलग रीति से देखेंगे।

आप कार्य से सम्बन्धित धर्म-विज्ञान के साथ इसका सामना करेंगे।

आप जानते हैं कि आप एक बड़ी मशीन का केवल एक छोटा सा भाग ही नहीं हैं। आप परमेश्वर की सन्तान हैं, जिसे अपने पिता की महिमा को करने के लिए उस विशेष स्थान पर रखा गया है।

जब आप अपनी दैनिक दिनचर्या में वापस लौटें, तो स्मरण रखें कि सामान्य कार्य भी आराधना का कार्य तब बन जाता है, जब वह परमेश्वर के लिए किया जाता है न कि केवल मनुष्य से प्राप्त अनुमोदन के लिए। जो छोटा या उपेक्षित लगता है, वह एक पवित्र भेंट बन सकता है, जब आपके कार्य विश्वास, प्रेम, और ईमानदारी से किए जाते हैं।

प्रेरित पौलुस हमें 1 कुरिन्थियों 15:58 में उत्साह देने वाले अन्तिम शब्द देता है। पुनरुत्थान और विश्वासी के भविष्य की आशा के विषय में एक लम्बा अध्याय लिखने के पश्चात्, वह इस व्यावहारिक आदेश के साथ जहाज़ को उतारता है कि:

“इसलिये, हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़, और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।”

तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।

यह बर्बाद किया गया समय नहीं है। यह अर्थहीन नहीं है।

दयालुता से उत्तर दिया गया हर एक ई-मेल, सर्वश्रेष्ठता से साफ़ किया गया हर एक फ़र्श, प्रेम से बदला हर एक लँगोट - यह सब महत्व रखता है। परमेश्वर इसे देखता है। वह इसे अपनी सेवा में किया गया कार्य मानता है।

इसीलिए प्रतिदिन का कार्य सेवकाई से भिन्न नहीं होता है। जब आप अपने पड़ोसी से अपनी सेवा की गुणवत्ता के द्वारा, और आपके आचरण की कर्तव्यनिष्ठा के द्वारा प्रेम करते हैं, और आप अपने आस-पास के लोगों के प्रति करुणा दिखाते हैं, तब आपका कार्यस्थल सेवकाई का एक शान्त कार्य बन जाता है।

तो, कार्य पर जाएँ।

यह जानते हुए कार्य पर जाएँ कि आप अनुग्रह ही से धर्मी ठहराए गए हैं, अपने प्रदर्शन से नहीं। यह जानते हुए कार्य पर जाएँ कि यीशु आपका सच्चा स्वामी है। यह जानते हुए कार्य पर जाएँ कि आप अपने पड़ोसी से प्रेम कर रहे हैं।

जब आप अपने कार्य पर वापस लौट कर जाते हैं, तो मैं आपके लिए प्रार्थना करता हूँ।

हे पिता, मैं इस मार्गदर्शिका को पढ़ने वाले व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने उन्हें करने के लिए कार्य दिया है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें अपनी दृष्टि से अपने कार्य को देखने में आप सहायता करें।

हे प्रभु, जब कार्य कठिन हो और काँटे तीखे हों, तो उन्हें धीरज दें। उन्हें स्मरण दिलाएँ कि वे प्रभु यीशु मसीह की सेवा कर रहे हैं।

क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

जब वे अपने व्यवसाय को मूर्ति बनाने के लालच में आएँ, तो उन्हें स्मरण दिलाएँ कि उनका जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। उन्हें विश्राम करने की सामर्थ्य दें।

और जब उन्हें लगे कि उनका कार्य छोटा है और कोई उस पर ध्यान नहीं देता है, तो उन्हें स्मरण दिलाएँ कि आपके लिए किया गया कोई भी कार्य कभी भी बेकार नहीं जाता है।

हे प्रभु, उनके हाथों के कार्यों को आशीषित करें। वे इतनी उत्कृष्टता और शालीनता के साथ कार्य को करें कि संसार उन्हें देखे और आपकी बड़ाई करे।

यीशु के नाम में, आमीन।



THE
MENTORING
PROJECT

CHRISTIAN LINGUA टीम विश्व की सबसे बड़ी मसीही अनुवाद एजेंसी है, जो विश्वभर में वीडियो, ऑडियो और मीडिया परियोजनाओं के लिए अनुवाद और ओवरडब सेवाएँ प्रदान करती है।

